The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 5 | May 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

प्राचीन भारतीय शिक्षा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डा0 अंजना बसेड़ा

विभागाध्यक्ष (बी0 एड0)

स्वामी विवेकानंद कॉलेज आफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी गौलापार हल्द्वानी नैनीताल

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

बीजारोपण, निरर्थक, संवेदनशील, निरक्षरता, प्रासंगिकता, स्वेच्छा, उपनयन, कमोवेश, ब्रह्मचर्य, निथ्यासन, तर्कशास्त्र

ABSTRACT

प्राचीन भारत की गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत एवम प्रगति का मूल आधार युगीन शिक्षा ही थी। प्राचीन भारतीय शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास था जिसमें चारित्रिक व आध्यात्मिक विकास सबसे प्रमुख था। भारतीय शिक्षा का बीजारोपण सुदूर अतीत में आज से लगभग 4,000 वर्ष पूर्व हुई,किंतु उसके सुसम्बद्ध स्वरूप के दर्शन वैदिक काल से आरंभ होते हैं। प्राचीन युग में शिक्षा को ना तो पुस्तकीय ज्ञान का पर्यायवाची माना गया है और न हीं जीविकोपार्जन का साधन इसके विपरीत शिक्षा को एक प्रकाश माना गया है जो व्यक्ति को अपना बहुअंगी विकास करने ,उत्तम जीवन व्यतीत करने और मोक्ष प्राप्त करने में सहायता देती थी।दूसरे शब्दों में शिक्षा को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति को पद प्रदर्शित करने वाला प्रकाश माना गया है।

<u>प्रस्तावना</u>

प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए गुरुकुल प्रणाली का विकास किया गया जहां पर एक गुरु जिनको ऋषि एवं महर्षि कहा जाता था विद्यार्थियों को सुख व सम्मानित जीवन जीने की शिक्षा प्रदान करते थे। उस समय में पुस्तकों के माध्यम से शिक्षा देने का प्रचलन नहीं था क्योंकि कागज का आविष्कार नहीं हुआ था इसलिए शिक्षण विधि के रूप में मौखिक अर्थात व्याख्यान एवं भाषण विधि का प्रयोग किया जाता था एवं शिक्षा व्यावहारिक रूप से दी जाती थी इसलिए जो भी वह सीखते थे उसे जीवन भर के लिए स्मरण कर लेते थे।प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में हमें औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार के शिक्षा केन्द्रो का उल्लेख मिलता है। औपचारिक शिक्षा मंदिर, आश्रम एवं गुरुकुलो में दी जाती थी, यही उच्च शिक्षा के केंद्र भी होते थे जबकि परिवार, पुरोहित ,पंडित आदि के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा दी जाती थी।विभिन्न धर्म सूत्रों में इस बात का उल्लेख है कि माता ही शिशु की प्रथम एवं सर्वश्रेष्ठ गुरु है। जैसे-जैसे सामाजिक विकास हुआ वैसे-वैसे शिक्षा संस्थानों का भी विकास होने लगा लेकिन व्यवस्थित शिक्षण संस्थाएं सार्वजनिक स्तर पर बौद्धौ द्वारा प्रारंभ की गई।

प्राचीन भारतीय शिक्षा का अर्थ

वैदिक साहित्य में 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया है; यथा-'विद्या', 'ज्ञान'. 'बोध' और 'विनय' । आधुनिक शिक्षाशास्त्रियों के समान प्राचीन भारतीयों ने भी 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग व्यापक और सीमित दोनों अर्थों में किया है। डा० ए० एस० अल्तेकर के अनुसार- व्यापक अर्थ में शिक्षा का तात्पर्य है व्यक्ति को सभ्य और उन्नत बनाना। इस दृष्टि से शिक्षा, आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। सीमित अर्थ में शिक्षा का अभिप्राय उस औपचारिक शिक्षा से है जो व्यक्ति को गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने से पूर्व छात्र के रूप में गुरु से प्राप्त होती थी।

प्राचीन युग में 'शिक्षा' को न तो पुस्तकीय ज्ञान का पर्यायवाची माना गया और न जीविको- पार्जन का साधन इसके विपरीत, शिक्षा को वह प्रकाश माना गया, जो व्यक्ति को अपना बहुअंगी विकास करने, उत्तम जीवन व्यतीत करने और मोक्ष प्राप्त करने में सहायता देती थी। दूसरे शब्दों में शिक्षा को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति को पथ-प्रदर्शित करने वाला प्रकाश माना गया था। इस कथन की पुष्टि में डॉ० ए० एस० अल्तेकर के निम्नांकित शब्द उल्लेखनीय है- "वैदिक युग से आज तक शिक्षा के सम्बन्ध में भारतीयों की मुख्य धारणा यह रही है कि शिक्षा, प्रकाश का वह स्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ-प्रदर्शन करता है।"

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य:

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारतीय शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करना तथा सामाजिक मूल्यों को समझना । इस दृष्टि से अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है-

1- प्राचीन भारतीय शिक्षा को समझना।

2- प्राचीन भारतीय शिक्षा के महत्व को समझना।

3 प्राचीन भारतीय शिक्षा व सामाजिक मूल्यों का व्यक्ति के विकास में भूमिका का अध्ययन करना।

4- प्राचीन भारतीय शिक्षा को विश्व स्तर पर पहचान दिलाना।

अनुसंधान क्रियाविधि

शोध अध्ययन में वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक

विधियो का उपयोग करते हुए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से

भारतीय ज्ञान परंपरा व सामाजिक मूल्य व उसके प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन की सीमा

मेरे अध्ययन का विस्तार आधुनिकता के दौर में प्राचीन भारतीय शिक्षा के महत्व तक सीमित है।

डेटा संग्रह

शोध अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया है जिससे पुरानी वह मूल जानकारी प्राप्त की गई है एवं माध्यमिक स्रोतों में लेखकों के कार्यों, महत्वपूर्ण शोध पत्रों, शोध निबंध ,शोधगंगा, ई संसाधन, विकिपीडिया व अन्य वेबसाइट भी सम्मिलित है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा

प्रायः हमारे समाज में हर उस वस्तु अथवा विचार को निरर्थक समझा जाने लगता है, जो पुरानी हो गई हो, एवं उपयोग में न हो। हालांकि कुछ मायनों में यह सही भी है। जैसे यदि हम सैकड़ों मील का सफर, वाहन से तय करने के बजाय, प्राचीन लोगों की भांति पैदल चलकर करेंगे, तो यह निश्चित तौर पर

मुर्खता ही है! हालांकि पैदल चलने में कोई भी अपवाद नहीं है, लेकिन सैकड़ों मील पैदल चलने में हमारे समय का भी तो ह्रास होता है। हालांकि कई बार पुराने तौर तरीकों को त्यागकर नए विचारों एवं अविष्कारों का प्रयोग करना एक समझदारी भरा निर्णय साबित हो सकता है। किंतु शिक्षा जैसे संवेदनशील एवं अतिमहत्वपूर्ण क्षेत्र में यदि हम प्राचीन भारतीय तौर-तरीकों (गुरुकुल संस्कृति) का कुछ बदलावों के साथ पुनः पालन करने लग गए, तो निश्चित तौर पर यह न केवल भारत में शिक्षण संबंधी कई समस्याओं को हल कर सकता है। साथ ही हमें पुनः विश्व गुरु होने का गौरव भी प्राप्त हो सकता है।

भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा को मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू समझा गया है। इसके प्रमाण के तौर पर विश्व का सबसे पुराना विश्वविद्यालय नालंदा विश्वविद्यालय भारत में ही स्थित है। यदि हम महाभारत एवं रामायण जैसे प्राचीन हिन्दू ग्रंथों का अवलोकन करते है, तो पाते हैं की प्राचीन समय में भारत में बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरुकुल (घर से दूर आवासीय संस्थान) भेजा जाता था। प्राचीन समय में गुरुकुल ही शिक्षा का एकमात्र साधन थे, जहां छात्र अपनी शिक्षा अवधि के दौरान शिक्षा ग्रहण करते थे। एक ओर जहां वर्तमान में भारतीय विद्यालयों में माध्यमिक या उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं तक छात्रों को सामान्य विषय पढ़ाए जाते हैं। एवं उसके बाद उन्हें उनकी रूचि के विषयों को ही पढ़ाया जाता है। वही प्राचीन गुरुकुलों में छात्रों को आज के विपरीत "हर विषय का ज्ञान, हर छात्र को नहीं दिया जाता था"। बल्कि एक छात्र को केवल उन्हीं विषयों अथवा कार्यों का ज्ञान दिया जाता था, जिन्हे उसे अपने बड़े हो जाने पर उपयोग में लेना अथवा पूरा करना पड़ता था। इसलिए गुरुकुल शिक्षा बचपन से ही विशेषज्ञता आधारित शिक्षा प्रणाली थी। हालांकि वर्तमान में भारत में सर्व शिक्षा (सभी के लिए शिक्षा) का अभियान चला हुआ है, लेकिन इसके बावजूद निरक्षरता ने 'सभी के लिए शिक्षा' के सपने को खोखले सपनों में बदल दिया है। जिसमें जनसंख्या विस्फोट को एक बड़ा कारण माना जा रहा है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार केवल 64.8% लोग साक्षर हैं और 35.2% अभी भी निरक्षर हैं किसी भी राष्ट्र के लिए अपनी आबादी की एक बड़ी संख्या को अनपढ़, अज्ञानी और अकुशल रहने देना सबसे बड़ा जोखिम है। भारत में प्राचीन समय से ही शिक्षा को हमेशा बहुत अनुशासित और सुव्यवस्थित माना गया है, तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में, पारंपरिक और धार्मिक ज्ञान, प्रमुख विषय माने जाते थे। लिखने का काम ताड़ के पत्ते और पेड़ की छाल पर किया जाता था, एवं अधिकांश शिक्षण, ऋषियों और विद्वानों द्वारा मौखिक रूप से किया जाता था। भारत में शिक्षा, सीखने की गुरुकुल प्रणाली के साथ और अधिक प्रासंगिक हो गई, जहां धर्म, दर्शन, युद्ध, चिकित्सा, ज्योतिष विद्या, प्रमुख विषय थे।

गुरुकुल शिक्षा की सबसे बड़ी एवं अनूठी प्रासंगिकता यही थी की, "गुरुकुल में शिक्षा मुफ्त में ग्रहण एवं प्रदान की जाती थी।" हालांकि पाठ्यक्रम की समाप्ति पर सम्पन्न परिवार के द्वारा स्वेच्छा से कुछ अनुदान गुरु दक्षिणा के रूप में भेंट किया जाता था। प्राचीन भारत में सभी क्रियाकलापों का मुख्य स्रोत धर्म माना जाता था। यह एक सर्वव्याप्त रुचि का विषय था, और इसमें न केवल प्रार्थना और पूजा बल्कि, दर्शन, नैतिकता, कानून और सरकार भी शामिल थी। उच्च जातियों के लिए वैदिक साहित्य का अध्ययन अनिवार्य था। जीवन में शिक्षा के सभी चरणों को सुव्यवस्थित रूप से परिभाषित किया गया था। पहले चरण के दौरान, बच्चा अपने घर पर प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करता था। दूसरे चरण में माध्यमिक एवं औपचारिक स्कूली शिक्षा केवल लड़कों तक ही सीमित थी, तथा जिसकी शुरुआत उपनयन, या धागा समारोह के बाद की जाती थी। यह मुख्य रूप से तीन उच्च जातियों के लड़कों के लिए कमोवेश अनिवार्य थी। ब्राहमण लड़कों का उपनयन समारोह 8 साल की उम्र में, क्षत्रिय लड़कों का 11 साल की उम्र में और वैश्य लड़कों ने 12 साल की उम्र में किया जाता था। दूसरे चरण की शिक्षा ग्रहण करने के लिए लड़का अपने पिता के घर को छोड़कर अपने गुरु के आश्रम (गुरुकुल) में प्रवेश करता था, जो कि जंगल के बीच स्थित एक घर के सामान ही था। आचार्य गुरुकुल में प्रवेश करने वाले बच्चों को अपने बच्चे के रूप में मानते थे, उन्हें मुफ्त शिक्षा देते थे, और उनके रहने और खाने के लिए कुछ भी नहीं लेते थे। हालाँकि अपने शिक्षण सत्र के दौरान शिष्य को यज्ञ करना पड़ता था, अपने गुरु के घर का काम करना पड़ता था। और अपने मवेशियों की देखभाल भी करनी होती थी। इस स्तर के अध्ययन में वैदिक मंत्रों ("भजन") और सहायक विज्ञानों का पाठ शामिल था। हालाँकि, शिक्षा का चरित्र जाति की आवश्यकताओं के अनुसार भिन्न था। पुरोहित वर्ग के बच्चों के लिए त्रयी-विद्या, या तीन वेदों का ज्ञान अनिवार्य था। गुरुकुल में छात्र को ब्रहमचर्य - यानी सादा पोशाक पहनना, सादा भोजन करना, सख्त बिस्तर का उपयोग करना और ब्रहमचर्य का जीवन व्यतीत करना पड़ता था। गुरुकुल में छात्रों की अवधि सामान्य रूप से 12 वर्ष तक थी। जो लोग अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहते थे, उनके लिए उम्र की कोई सीमा नहीं थी। महिलाओं को शिक्षा से वंचित नहीं किया गया था, लेकिन आमतौर पर लड़कियों को घर पर ही शिक्षा दी जाती थी। प्राचीन भारत में स्त्रियों को शिक्षा और अध्यापन का समान अधिकार दिया जाता था। 'गायत्री' या 'मैत्रेयी' जैसी महिला द्रष्टा 'परिषद' (विधानसभा) की शैक्षिक बहस और कार्यवाही में प्रमुख भागीदार थीं।

धार्मिक विषय की प्रकृति के अनुसार छात्र का पहला कर्तव्य अपने विद्यालय के विशेष वेद को याद करना था, जिसमें सही उच्चारण पर विशेष जोर दिया जाता था। भारत में प्राचीन शिक्षा प्रणाली में तीन सरल प्रक्रियाएं थीं - श्रवण, मनन और निध्यासन। श्रवण ज्ञान को तकनीकी रूप से श्रुति कहा जाता था

(जो कानों से सुना जाता था न कि लिखित में जो देखा जाता था)। मनन का अर्थ होता है, कि छात्र को शिक्षक द्वारा दिए गए पाठों के अर्थ की व्याख्या करने की आवश्यकता होती थी। ताकि वे पूरी तरह से आत्मसात हो सकें। यह श्रवण के माध्यम से प्राप्त ज्ञान के बारे में किसी भी संदेह को दूर करने के लिए होता था। निध्यासन का अर्थ है ,उस सत्य की पूर्ण समझ हो जाना जो उसे सिखाई जाती है। ताकि छात्र केवल समझने के बजाय सत्य को जी सके।

पहली सहस्राब्दी की शुरुआत और उससे कुछ समय पूर्व तक्षशिला विश्वविद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय और उज्जैन जैसे विश्वविद्यालयों की शुरुआत हुई। जहां पहली बार अध्ययन के ठोस विषय जैसे खगोल विज्ञान, व्याकरण, तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, साहित्य, कानून, चिकित्सा, हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और अर्थशास्त्र (राजनीति, लोक प्रशासन और अर्थशास्त्र), गणित और तर्कशास्त्र अस्तित्व में आए। प्रत्येक विश्वविद्यालय को किसी एक विषय में विशेषज्ञता प्राप्त की। उदाहरण के तौर पर तक्षशिला में चिकित्सा आधारित ज्ञान दिया जाता था, उज्जैन विश्वविद्यालय में खगोल विज्ञान एवं नालंदा विश्वविद्यालय अध्ययन की लगभग सभी शाखाओं से परिपूर्ण था।

संदर्भ सूची

https://ugcnetpaper1.com/education-in-ancient-india/

https://www.britannica.com/topic/education/Education-in-classical-cultures

http://www.educationindiajournal.org/home_art_avi.php?path=&id=267